3. **Remudiation Primciple :-** इस अधिनियम का अर्थ छात्र की कमजोरियों का उपचार करने से है। गलत अनुक्रिया से छात्र की कमजोरियों का निदान होता है। उपचारात्मक अनुदेशन प्रत्येक गलत अनुक्रिया के लिए अलग-अलग पृष्ठ पर दिया जाता है जिन्हे Error Page कहते है।

Structure of Branchial Programme Instruction

शाखीय अभिक्रमित अनुदेशन मे पाठ्यवस्तु को छोटे-2 पदों मे न रखकर समस्त पाठ अथवा एक इकाई या एक प्रत्यय के रूप मे रखा जाता है। प्रत्येक पद का आकार बड़ा होता है, जो एक या दो पैराग्राफ से लेकर सम्पूर्ण पृष्ठ तक का होता है। अतः छात्र अध्ययन करते समय पृष्ठों को क्रमबद्ध रूप में नही पढ़ता। इसीलिए इस प्रकार के पाठ्यवस्तु को 'उलट पाठ्य पुस्तक' [Scramble Text Book] कहते है। इस प्रकार की पाठ्य पुस्तक में दो प्रकार के Page होते हैं —

1. **Home Page :-** इस Page पर नवीन प्रत्यय की व्याख्या की जाती है। छात्र उस व्याख्या को पढ़कर सीखता है, तथा प्रत्यय की व्याख्या के अंत मे Multiple Choice Question की व्यवस्था होती है। इन प्रश्नों के आधार पर छात्र को सही अनुक्रिया का चयन करना होता है। इसका उद्देश्य परीक्षण करना नही अपितु निदान करना होता है। छात्र जब गलत अनुक्रिया करता है, तब उसकी कमजोरियों का पता लगता है। Home Page के तीन कार्य होते है —

(i) शिक्षण
(ii) अनुक्रिया
(iii) निदान

A Quality Product from Chitra

Format of Home Page –

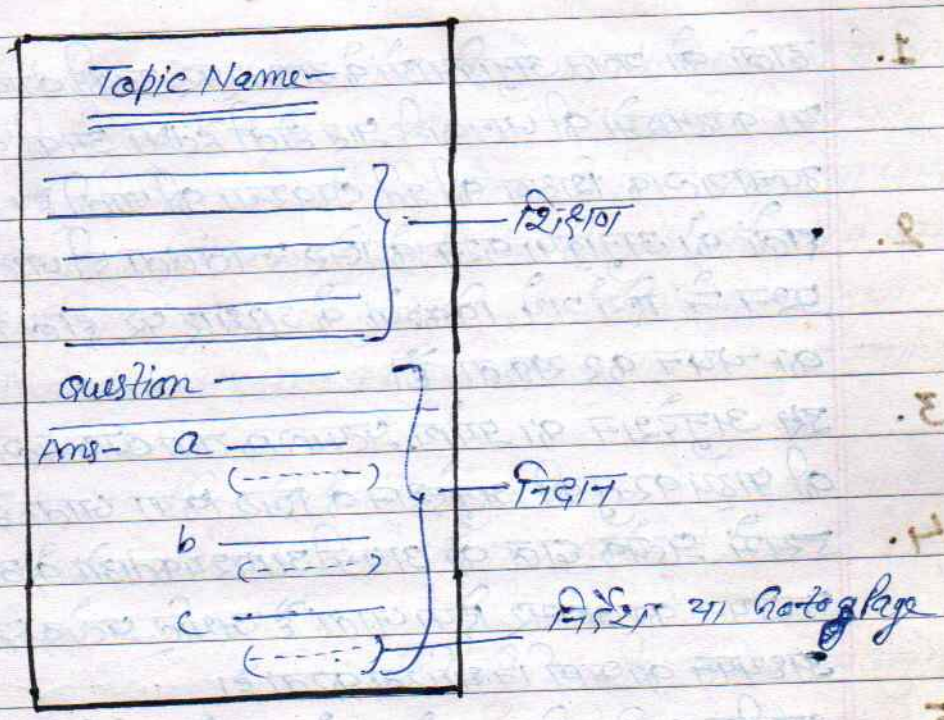

2. **Error Page :–** जब छात्र Home Page के प्रश्न के लिए अनुक्रिया करता है, तब उसकी पाठ्यवस्तु सम्बन्धी कमजोरियों का पता चलता है अर्थात् जब छात्र विकल्पों के आधार पर अनुक्रिया करता है तब उसे ज्ञात होता है कि उसने जो अनुक्रिया की है वह अनुक्रिया गलत है अथवा सही। यदि उसने गलत अनुक्रिया की है तो उसे अपनी गलती के कारणों का बोध होगा, इसे Error Page कहते है। Error Page पर निर्देशों के अनुसार छात्र को सूचनाओं को ध्यानपूर्वक पढ़ना पड़ता है, तथा उसी आधार पर सही अनुक्रिया का चयन करना होता है। इस प्रकार Error Page पर सुधारात्मक अथवा उपचारात्मक अनुदेशन दिये जाते है। एक Error Page पर कई सूचनाओं तथा कई Home Page के लिए उपचारात्मक अनुदेशन दिये जाते है। अगले Page पर छात्र सही अनुक्रिया करने के बाद ही पहुँचता है।

A Quality Product from Chitra

Characteristic

~~Importance~~ Of Branchial Programme Instruction:-

1. छात्रों को गलत अनुक्रियाओं के आधार पर उनकी व्यक्तिगत कमजोरियें या कठिनाइयों की जानकारी प्राप्त होती है तथा उनकी कमजोरियों के लिए उपचारात्मक शिक्षण की भी व्यवस्था की जाती है।
2. छात्रों को अनुक्रिया करने के लिए स्वतंत्रता दी जाती है अर्थात प्रश्न में दिये गये विकल्पों के आधार पर छात्र किसी भी विकल्प का चयन कर सकता है।
3. इस अनुदेशन का प्रयोग प्रत्यात्मक तथा व्याख्यात्मक दोनों प्रकार की पाठ्यवस्तु की अनुदेशन के लिए किया जाता है।
4. इसमें प्रत्येक छात्र को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार अध्ययन का अवसर दिया जाता है अर्थात प्रत्येक छात्र स्वयं अपने अध्ययन का मार्ग निर्धारित करता है।
5. शाखीय अभिक्रमित अनुदेशन में पृष्ठपोषण देने के लिए तुरंत व्यवस्था की जाती है।
6. गलत अनुक्रिया करने पर छात्र को उस अनुक्रिया को सही करने के लिए अवसर प्रदान किया जाता है।

Demerit:- 1. छात्रों को अध्ययन के समय पृष्ठों को क्रम का अनुसरण नही करना होता है अर्थात उन्हे अपनी अनुक्रिया की पुष्टि के लिए कभी आगे तो कभी पीछे जाना पड़ता है। इसीलिए छात्र इस प्रकार के अनुदेशन में कम रुचि लेते है, तथा अध्ययन में कठिनाई का अनुभव करते है।

2. इस अनुदेशन का प्रयोग प्राथमिक तथा माध्यमिक कक्षा के लिए नही किया जा सकता है।

3. छात्रों को विकल्प के आधार पर अपनी अनुक्रियाओं का चयन करना होता है। अतः छात्र बिना बोधगम्य के अपने अनुमान के आधार पर ही विकल्प का चयन कर सकते है।

A Quality Product from Chitra